CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सरल हवन पद्धति

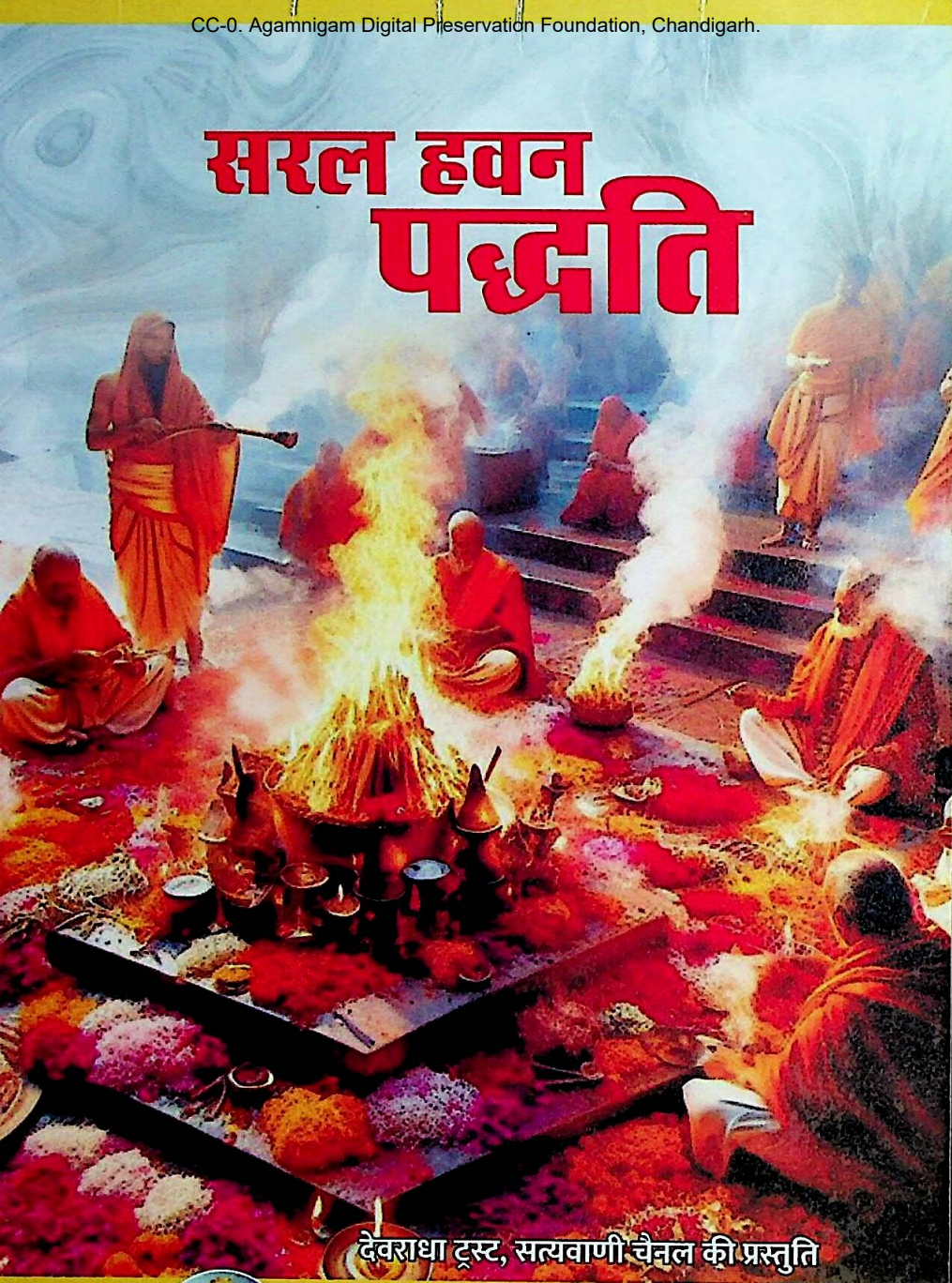

देवराधा ट्रस्ट, सत्यवाणी चैनल की प्रस्तुति

परमेष्ठी गुरु अघोरी रामदास महाराज
परम गुरु अघोरी ननकीराम महाराज
गुरु सीए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किताबों की सूची

देव राधा ट्रस्ट के द्वारा पिछले 6 वर्षों में कई किताबें लिखी गई है जो आपके जीवन को सही रास्ते पर ले जाने के लिए बनाई गई है उनकी सूची इस प्रकार है –

- पूर्व जन्म प्रारब्ध कर्म व ज्योतिष
- काला जादू कैसे काटे कैसे करें सीखने वालों के लिए छायाचित्र
- पितृ दोष कारण व निवारण
- वैवाहिक जीवन संतान और ज्योतिष
- तंत्र से शत्रु नाश कैसे करें
- शमशान साधना पद्धति
- मंदिर में शक्ति को जागृत कैसे करें
- नवग्रह शांति कैसे करें
- आओ ज्योति सीखें
- ज्योतिष में शनि राहु केतु का महत्व
- काला जादू कैसे काटे
- सर्व देव तांत्रिक अनुष्ठान पद्धति शमशान मरघट मसान पूजा पद्धति
- श्री दुर्गा सप्तशती का विश्लेषण गुप्त सप्तशती शक्ति का विश्लेषण नवरात्रि का विश्लेषण
- मनुष्य जीवन का कैंसर
- महामाया से मोक्ष काली रहस्य
- जीवन में संघर्ष क्यों
- अमावस्या दोष श्राद्ध कर्म, कालसर्प दोष, नाग दोष
- मंत्र और स्तुति
- जीवन का समुद्र मंथन
- सुखी रहने के उपाय
- कष्टो से मुक्ति के उपाय
- शिव रहस्य
- साधना सिद्धि
- हवन यज्ञ अनुष्ठान पद्धति
- प्राण प्रतिष्ठा कैसे करें
- निर्धन से धनवान कैसे बने
- विधाता के नियम धर्म से धर्म की और आप से पुण्य की ओर

यूट्यूब चेनल :- CA DR ASHOK KUMAR GUPTA

यूट्यूब चेनल :- DEVRADHATRUST

फेसबुक :- CA ASHOK KUMAR GUPTA

पंजीयन क्रमांक - 01/बी - 113/13-14, दिनांक - 07/01/2014

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हवन करने की विधि एवं विभिन्न स्तुति

मंत्र – ऊँ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति,
नर्मदे, सिन्धु, कावेरी, जलेऽस्मिन संन्निधिं कुरू ।
यह बोलते हुए पहले से स्थापित कलश में तीर्थो का आह्वान करें

मंत्र –
ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा,
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यंतरः शुचि।
ऊँ पुनातु पुन्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः
कलश से बाये हाथ की हथेली में जल लेकर यह मंत्र पढते हुए उस जल को दाए हाथ की अगुलियों से अपने ऊपर छिडके।

कलश से फिर जल लेकर (6 बार) आचमन करें,

आत्म रक्षा मंत्र

ऊँ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करे।

ऊँ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करे।

ऊँ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करे।

ऊँ ह्रीं गणेशाय नमः स्वाहा
बोलते हुए जल ग्रहण करे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ ह्रीं स्तम्भाय नादिचक्राय नमः स्वाहा

बोलते हुए जल ग्रहण करे।

ऊँ ऐं ब्राह्मयैं त्रैलोक्य डामराय नमः स्वाहा

बोलते हुए जल ग्रहण करे।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा
बोलते हुए जल से हाथ धोले।

शिखा बन्धनम्

चोटी की गाठ लगा लें दाहिना हाथ चोटी याने शिखा पर रखकर निम्न मंत्र पढे। कृपया स्त्रियॉ यह कार्य न करें।

मंत्र –

चिद्रूपिणी महामाये दिव्य तेजः समन्विते

तिष्ठदेवी शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरूष्व में।

आसन शुद्धि

निम्न मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिडकना है

ऊँ ह्रीं आधारशक्तये कमलासनायै नमः

पृथ्वी पूजन

ऊँ पृथ्वी त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुनाधृता,

त्वं च धारय मां देविं पवित्रं कुरू चासनम् ।

चन्दन धारणम्

ऊँ चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्

आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्षा सूत्रम्

ऊँ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणां,

दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

गुरू स्मरण

गुरूर्ब्रम्हा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः,

गुरूःसाक्षात् परब्रम्ह, तस्मै श्री गुरूवे नमः।

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्

तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

ऊँ बृं बृहस्पतये नमः, ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरूवे नमः

ऊँ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः,

ऊँ हंस, ऊँ परमपदं, तर्पयामी ऊँ फट् स्वाहा।

श्री सरस्वती मंत्र

1. नीहार हार धनसार सुधा कराम्भा कल्याणंदा कनक चम्पकदाम् भूषाम्।

   उतुंगपीनकुचकुम्भ, मनोहरांगी वाणी नमामि मनसा वचसा विभूत्यै।।
2. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं महासरस्वत्यै नमः
3. ऊँ नमो भगवती सरस्वती परमेश्वरी वाग्वादिनी मम विद्यां देहि भगवती हंस वाहिनी, हंस समारूढा, बुद्धिं में देहि, प्रज्ञां में देहि, विद्यां देहि, परमेश्वरी सरस्वती स्वाहा ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4 सरस्वती नमो नित्यम भद्रकाल्यै नमो नमः। वेद वेदांत वेदांग विद्या स्थानेभ्य एवं च।

5. सरस्वती महाभागे विद्ये कमल लोचने
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते

6 ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनी सरस्वती
ममः जिव्हाग्रे वद् वद्, क्लीं श्रीं, ह्रीं, ऐं, ऊँ नमः स्वाहा

7 ऊँ ऐं सरस्वत्यै नमः

कलश पूजन

ऊँ वरूणाय नमः आवहयामि स्थापयामि ध्यायामि, गन्ध, अक्षत, पुष्पं धूपं, दीपं, नैवेद्य समर्पयामि।

ऊँ कलशस्य देवताभ्योनमः,

दीपपूजनम्

1. ऊँ अग्नि ज्योर्ति, ज्योर्ति अग्निः स्वाहा।

सूर्यो ज्योर्ति, ज्योर्तिः सूर्यः स्वाहा, अग्नि र्वर्च्चो, ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्योवर्चो ज्योति, र्वर्च्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा,

2. शुभम करोती कल्याणं, आरोग्यं सुख सम्पदां, शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीप ज्योति नमोस्तुते।

3. दीपो ज्योति परं ब्रम्ह, दीपो ज्योति जनार्दनः
दीपो हरतु में पापं, पूजादीपं नमोस्तुते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवता नमस्कार

1. ऊँ श्री मन् महागणपतये नमः,

2. ऊँ ह्रीं श्रीं उमा महेश्वराभ्याम् नमः

3. ऊँ शचिपुरन्दराभ्याम् नमः, 4. ऊँ वाणी हिरण्य गर्भाभ्याम् नमः

5. ऊँ लक्ष्मी नारायणाभ्याम् नमः, 6. ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः

7. ऊँ इष्ट देवताभ्यो नमः, 8. ऊँ ग्राम देवताभ्यो नमः

9. ऊँ स्थान देवताभ्यो नमः, 10. ऊँ स्थापित देवताभ्यो नमः

11. ऊँ सर्वेभ्यो देवैभ्यो नमः, 12. ऊँ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः

13. ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, 14. ऊँ सर्वेभ्यो ऋषीभ्यो नमः

15. ऊँ सर्वेभ्यो सिद्धेभ्यो नमः, 16. ऊँ नवग्रह देवताभ्यो नमः

17. ऊँ वास्तु देवताभ्यो नमः, 18. ऊँ गुरुभ्यो नमः

19. ऊँ माता पितृ चरणकमलेभ्यो नमः, 20. ऊँ पितृभ्यो नमः

21. ऊँ ह्रीं चतुःषष्ठी योगिनी देविभ्यो नमः,

22. ऊँ ह्रीं षोडष मात्रिका देविभ्यो नमः

23. ऊँ ह्रीं सप्त घृत मात्रिका देविभ्यों नमः, 24. ऊँ सप्त सागरेभ्यो नमः, 25. ऊँ सप्त नदिभ्यो नमः, 26. ऊँ सप्त ऋषिभ्यो नमः 27. ऊँ क्षं क्षैत्रपालाय नमः, 28. ऊँ बं भैरवाय नमः

29. ऊँ क्रीं कालिकायै नमः, 30. ऊँ हं हनुमते नमः 31. ऊँ क्लीं कृष्णाय नमः, 32. ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः 33. ऊँ नमो नारायणाय, 34. ऊँ ब्रम्हणे नमः 35. ऊँ विष्णवे नमः, 36. ऊँ महेश्वराय नमः 37. ऊँ रुद्राय नमः, 38. ऊँ ईश्वराय नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

39. ऊँ सदाशिवाय नमः, 40. ऊँ परमेश्वराय नमः 41. ऊँ वेद शास्त्राय नमः 42. ऊँ वेद अर्थाय नमः 43. ऊँ रामायणाय नमः 44. ऊँ भागवताय नमः 45. ऊँ पुराणाय नमः 46. ऊँ सिद्धपिठाय नमः 47. ऊँ दिग्पालाय नमः 48. ऊँ पंचभूताय नमः 49. ऊँ महाभूताय नमः 50. ऊँ तंत्र–मंत्र यंत्राय नमः

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करें, फिर (पवित्रेस्थो वैष्णव्यो) इत्यादि मन्त्र से कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नांकित रूप से संकल्प करें –

संकल्प

पुष्प, सुपारी, पान, चावल, कुंकुंम, सभी सामग्री थोड़ी–थोड़ी मात्रा में लेकर संकल्प मंत्र बोलें–

ऊँ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु अद्य ब्रह्मणोऽह्नि, द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतीतमे कलयुगे कलिप्रथम् चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगते .....राज्य का नाम..... शहर का नाम.....क्षेत्रे ..... नगरे .....सम्वत्सरे .....अयने .....ऋतौ ... . महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे .....पुण्य पवित्र मासे

पक्षे .....तिथौ .....नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे .....वासरे .....राशि स्थिते चंद्रे ..... राशि स्थिते सूर्ये ..... राशि स्थिते देव गुरौ बृहस्पते ..... शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ **अमुक गोत्र उत्पन्नस्य .....**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अमुक नाम ..... अहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, अप्राप्तलक्ष्मी, प्राप्त्यर्थं, प्राप्त लक्ष्म्या चिरकाल संरक्षणार्थं, सकल, मन, ईप्सित कामनां, सं सिध्यर्थं, लोके वा राजसभायां राजद्वारे, व्यापारे, देशे, विदेशे, यन्त्रालये, मंत्रालये, न्यायालये, जले, वायु मार्गे, सर्वत्र यशोविजय, लाभादि, प्राप्त्यर्थं, पुत्र पौत्रादि अभिवृद्ध्यर्थं, च इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं तथा मम स–भार्यस्य, स–पुत्रस्य, स–बान्धवस्य अखिल कुटुम्ब सहितस्य समस्त, भय व्याधि, जरापीडा, मृत्यु, परिहार द्वारा, आयु, आरोग्य, आदित्यादि, नवग्रह, अनुकूलता सिद्धयर्थं तथा इन्द्रादि, दशदिग्पाल प्रसन्नता सिद्धयर्थं, आदि दैविक आदि भौतिक, आध्यात्मिक त्रिविध तापोप शमनार्थं, कायिक वाचिक मानसिक पाप शमनार्थं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्धयर्थं मम चलित कार्यं उत्तरोत्तर वृद्धयर्थं, नवीन कार्य प्राप्त्यर्थं, नवीन उत्साह प्राप्त्यर्थं, सुख, समृद्धि, शान्ति, प्राप्त्यर्थं, सर्वमंगल कामनया, कार्य, सिध्यर्थं, महालक्ष्मी प्रीतिकामः, तंत्र मंत्र जनित बाधा, ग्रहजनित बाधा, नागजनित बाधा, पित्रजनित बाधा भूत, प्रेत, पिशाच, दानव, मानव जनित बाधा, स्वतंत्र, स्वमंत्र, स्वकिया, सिध्यर्थं, अमुक गोत्रस्य, अमुक नाम, **रामदास महाराज शाम्भवी गोत्र** द्वारा हवन, जप कर्म अहं करिष्ये।

18. रक्षा विधानम् :–

पीली सरसो हाथ में रखकर चारो दिशाओ में फेके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ पूर्वे रक्षतु वाराह, आग्नेयां गरूडध्वजः। दक्षिणे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दन उत्तरे श्रीपति रक्षेद् ऐशान्यां हि महेश्वरः। ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।

ऊँ प्राच्यां रक्षतु मा ऐन्द्री, आग्नेय्याम अग्नि देवता, दक्षिणेऽवतु वाराही, नैऋत्यां खडगधारणी, प्रतीच्यां वारूणी रक्षेद्, वायव्यां मृगवाहिनी, उदीच्यां पातु कौमारी, ईशान्या शूलधारिणी, उर्ध्वं ब्रम्हाणी में रक्षेद् अधश्ताद् वैष्णवी तथा एवं दशो दिशां रक्षेद् चामुण्डा शववाहना।

हवन कुण्ड पूजन

ऊँ ब्रह्मणे नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ महेश्वराय नमः,
तीनो मेंखला पर पूजन करना

योनी पूजन

ऊँ जयन्ती मंगलाकाली, भद्रकाली कपालिनी,
दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा नमोस्तुते

अग्नि पूजन करे मन्त्र द्वारा

अग्नि प्रज्वलन

तीन समिधा घी में भीगो कर हवन कुण्ड में डाले मोन रहकर

आज्याहुतिः हो सके तो निम्न मंत्रो की आहुति घी से देवे

ऊँ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापजये इदं न मम, ऊँ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय इदं न मम ऊँ अग्नये स्वाहा, इदं अग्निये इदं न मम

ऊँ सोमाय स्वाहा

ऊँ भूः स्वाहा, ऊँ भुवः स्वाहा, ऊँ स्वः स्वाहा, ऊँ भूः भुवः स्वः स्वाहा

ऊँ ब्रह्मणे नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ महेश्वराय नमः,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ, यं, रं, लं, वं, हं, षं, स्वाहा

21. घी की आहुति देते समय

ऊँ भूः स्वाहा इदम् अग्रेय न मम्।
ऊँ भुवः स्वाहा इदम् वायवे न मम्।
ऊँ स्वः स्वाहा इदम् सूर्याय न मम्।

गणपति आहुति

ऊँ गणानां त्वा गणपतिगूँमहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिगुंहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिगुँहवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा।।

तीन आहुति छोड़ने के बाद अनुष्ठान कर्ता नवग्रह की नौ समिधाओं को घी में डुबो लें और निम्न मंत्रो से पृथक–पृथम नौ आहुतियां छोड़ें।
ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः, ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः, ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भोमाय नमः, ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः, ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः, ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः, ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनिश्चराय नमः, ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः, ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

देवता नमस्कार

1. ऊँ श्री मन् महागणाधिपतये नमः,
2. . ऊँ ह्रीं उमा महेश्वराभ्याम् नमः
3. ऊँ शचिपुरन्दराभ्याम् नमः, 4. ऊँ वाणी हिरण्य गर्भाभ्याम् नमः
5. ऊँ लक्ष्मी नारायणाभ्याम् नमः, 6. ऊँ कुलदेवताभ्यो नमः
7. ऊँ इष्ट देवताभ्यो नमः, 8. ऊँ ग्राम देवताभ्यो नमः
9. ऊँ स्थान देवताभ्यो नमः, 10. ऊँ स्थापित देवताभ्यो नमः
11. ऊँ सर्वेभ्यो देवैभ्यो नमः, 12. ऊँ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13. ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, 14. ऊँ सर्वेभ्यो ऋषीभ्यो नमः
15. ऊँ सर्वेभ्यो सिद्धेभ्यो नमः, 16. ऊँ नवग्रह देवताभ्यो नमः
17. ऊँ वास्तु देवताभ्यो नमः, 18. ऊँ गुरुभ्यो नमः
19. ऊँ माता पितृ चरणकमलेभ्यो नमः, 20. ऊँ पितृभ्यो नमः
21. ऊँ ह्रीं चतुःषष्ठी योगिनी देविभ्यो नमः,
22. ऊँ ह्रीं षोडष मातृका देविभ्यो नमः 23. ऊँ ह्रीं सप्त घृत मातृका देविभ्यों नमः, 24. ऊँ सप्त सागरेभ्यो नमः, 25. ऊँ सप्त नदिभ्यो नमः, 26. ऊँ सप्त ऋषिभ्यो नमः 27. ऊँ क्षं क्षैत्रपालाय नमः, 28. ऊँ बं भैरवाय नमः
29. ऊँ क्रीं कालिकायै नमः, 30. ऊँ हं हनुमते नमः
31. ऊँ क्लीं कृष्णाय नमः, 32. ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय
33. ऊँ नमो नारायणाय, 34. ऊँ ब्रम्हणे नमः 35. ऊँ विष्णवे नमः, 36. ऊँ महेश्वराय नमः 37. ऊँ रुद्राय नमः, 38. ऊँ ईश्वराय नमः 39. ऊँ सदाशिवाय नमः, 40. ऊँ परमेश्वराय नमः 41. ऊँ वेद शास्त्राय नमः 42. ऊँ वेद अर्थाय नमः 43. ऊँ रामायणाय नमः
44. ऊँ भागवताय नमः 45. ऊँ पुराणाय नमः 46. ऊँ सिद्धपिठाय नमः
47. ऊँ दिग्पालाय नमः 48. ऊँ पंचभूताय नमः 49. ऊँ महाभूताय नमः
50. ऊँ तंत्र–मंत्र यंत्राय नमः

29. पूर्ण आहुति मंत्र

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते

30. घी की धार लगाना जिसे वसोधारा भी कहा जाता है

ऊँ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् स्वाहा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ घृतं घृतपावानः पिबत वसां–वसांपावानः पिबतं अन्तरिक्षस्यह विरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिशो उद्विशो दिग्भ्यःस्वाहा

31. साष्टांग नमस्कार करे भस्म धारणम्

ऊँ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे पदे।।
प्रदक्षिणां समर्पयामि।

32. शुभकामना बोले

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

33. मंत्र पुष्पांजलि :–

ऊँ यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

34. क्षमा प्रार्थना

आवाहनम् न जानामि न जानामि तवार्चनम ।

पूजाम् चैव न जानामि क्षम्यताम् परमेश्वर।।

मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् सुरेश्वर।

यतपूजितम् मया देव परिपूर्णम् तदस्तु मे।।

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।

दासोऽयमिति माम् मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पापोहम् पापकर्माहम् पापात्मा पाप संभवः।

त्राहिमाम् पार्वतीनाथ सर्वपाप हरो भव।।

35. पूजा अर्पणम्

अनेन कृतेन महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा

श्रीभवानी शंकर महारुद्रः प्रीयताम न मम।।

ऊँ श्री साम्ब सदा शिवार्पणमस्तु।

यह एक उदाहरण के रूप में मंत्र दिया गया है। आपको अपने ईष्ट के अनुसार मंत्र परिवर्तन करना है। जैसे कि अनेन कृतेन श्रीदुर्गा सप्तशती हवन कर्मणा श्री जगदम्बा दुर्गा देव्यै प्रीयताम न मम् ऊँ श्री दुर्गाये अर्पणम्, मस्तु।

जिस शक्ति का अनुष्ठान किया गया है उस ईष्ट का नाम लेकर। उसका अर्पण किया जाता है।

36. शान्ति अभीसिंचन :–

कलश का जल लेकर सभी बैठे हुए व्यक्तियों पर एंव पूरे घर में छिड़काव करें निम्न मंत्र बोलकर –

ऊँ द्यौः शान्ति अन्तरिक्षऽशान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति विष्वदेवाः शान्तिब्रम्ह्यशन्तिः सर्वगुंशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किताबों की सूची

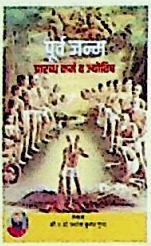

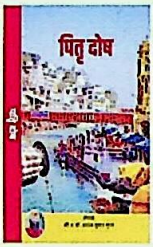

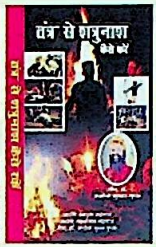

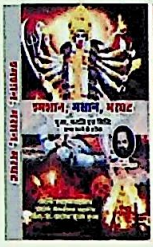

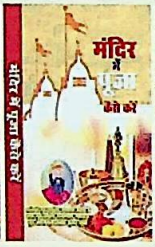

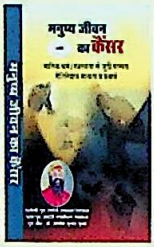

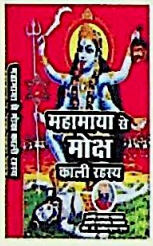

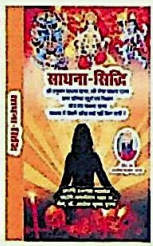

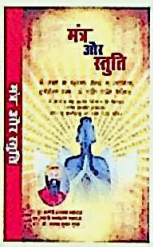

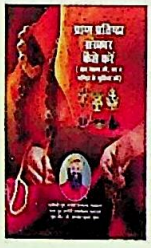

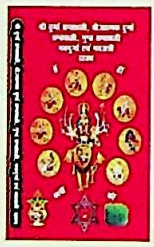
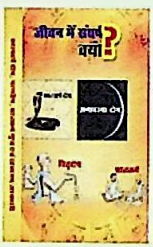

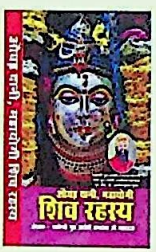

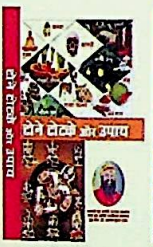

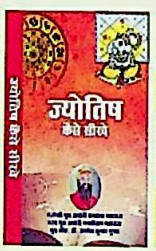

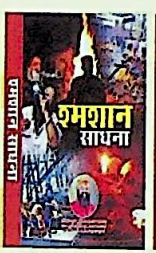

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Devradha Trust
Regd. No 01-07/01/2014
Budhni, Distt Sehore, MP
Mob.: 9893128047, 7987237885
E-mail: devradhatrust@gmail.com

Shambhavi Ashram
H.No. D-9, Raj Royal Enclave, Ujjain, Distt - Ujjain MP

Chief Trustee
CA DR ASHOK KUMAR GUPTA
M.com, M.A., PHD, Chartered Accountants

House No-09, Samardhi Parisar, Nayapura, Kolar Road,
Rajharsh Colony Bhopal 462042 M.P.
PhonePe | 9893128047

कामेश्वरी आश्रम – नूटनपारा, कामाख्या पश्चिम द्वार
कामाख्या धाम, गोहाटी

हमारे अन्य सहयोगी प्रतिष्ठान

श्री देवराधा समर्पण सामाजिक संस्था
श्री देवराधा शैक्षणिक प्रचार प्रसार समिति
अशोक देवराधा सामाजिक कल्याण समिति
बुधनी माँ जगतजन्नी उत्सव एवं सामाजिक समिति

प्रशिक्षण स्थल व संपर्क सूत्र

सी.ए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता
एम.कॉम., एम.ए. (अर्थशास्त्र), एम.ए. (समाज शास्त्र), पी.एच.डी.,
पराशक्ति विशेषज्ञ, तन्त्राचार्य, ज्योतिषाचार्य, मन्त्राचार्य, यज्ञाचार्य,
भागवताचार्य, प्रवचनकर्ता
मो. : 7987237885, 7649862712, 9893128047, 9977831616
शनि मन्दिर एवं हनुमान मंदिर के पास, वी.आई.पी. रोड,
बुधनी घाट रोड, बुधनी
तह.:- बुधनी, जिला :- सीहोर (म.प्र.), भारत